# उपसंहार

हिन्दी साहित्य-संसार रूपी नक्षत्राकाश के समसामयिक परिदृश्य को अपनी संख्यातीत विधीय महत्व की सर्जनाओं द्वारा प्रदीप्त करने वाले ख्यातिलब्ध कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रज्ञाजन्य नैसर्गिक प्रतिभा एवं उत्कृष्ट सृजनशीलता के माध्यम से समकालीन साहित्यरुपी उपवन को इन्होंने विभिन्न विधाओं में की गयी रचनाओं रूपी लता-प्रतानो से सुगंधित बनाए रखा है। इनके व्यक्तित्व में अंतर्भुक्त इन अनन्य प्रवृत्तियों में इनकी अंतर्वृत्तियों के साथ-साथ देशकाल और वातावरण की परिस्थितियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कवि, कथाकार, नाटककार एवं विमर्शकार का एक साथ अभिधान धारण करने वाले बिस्मिल्लाह जी के व्यक्तित्त्व निर्माण में जीवन के भोगे हुए कटु यथार्थ के साथ ही युगबोध की भी विशिष्ट महत्ता रही है। एक तरफ जहाँ पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं, असंवेदनाओं, अभावग्रस्तताओं आदि ने इनकी स्वानुभूति को कटु बनाकर उसे अभिव्यक्ति की सीमा तक पहुँचाया, वहीं दूसरी तरफ युगबोध के रूप में बीसवीं शताब्दी के नौवे दशक से लेकर वर्तमान सदी के दूसरे दशक तक भारतीय उपमहाद्वीप में जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिक्षेत्र में प्रकीर्णित असंख्य विसंगतियों और विद्रूपताओं ने बिस्मिल्लाह जी के युगबोध को रचनाओं में परिणत कर दिया।

अभिव्यक्ति और युगबोध का ही सम्मिलित परिणाम है- बिस्मिल्लाह जी का समय, व्यक्तित्व जिसमें सम्मिलित है इनका संबंध गद्य और पद्य साहित्य से है- मुसे बोलने दो, छोटे बुटों का बयान, वली अहम्मद और करीमन बी की कविताएँ तथा किसके हाथ गुलेल आदि शीर्षक काव्य संग्रहों में संग्रहित असंख्य कविताएँ जहाँ बिस्मिल्लाह जी के कवि व्यक्तित्व की अभिपुष्टि प्रदान करती हैं, वहीं टूटा हुआ पंख, कितने-कितने सवाल, रैन बसेरा, अतिथि देवो भव, जीनीया के फूल, रफ-रफ मेल तथा शादी का जोकर नाम कहानी संग्रहो में

संग्रहित अगणित कहानियों और समर शेष है, झीनी-झीनी बीनी चदरिया, जहरबाद, दंतकथा, मुखड़ा क्या देखे, रावी लिखता है तथा अपवित्र-आख्यान, कुॅठाव आदि उपन्यास इनके कथाकार व्यक्तित्व को प्रसिद्धि के उत्कर्ष तक ले जाते हैं। वैसे तो बिस्मिल्लाह जी ने नाटक, आलोचना, अनुवाद, निबंध एवं संपादन कार्य आदि विधाओं के लेखन में भी अपनी सिद्धहस्त लेखनी को सरपट दौड़ाया है लेकिन इनकी रचनाधर्मिता ने कहानी और उपन्यास संसार में अधिक विचरण किया है, जिसके कारण ही इन्हें कथाकार की श्रेणी में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बिस्मिल्लाह जी की कहानियों और उपन्यास केवल मात्रात्मकता में ही नहीं बल्कि गुणात्मकता में भी समकालीन रचनाकारों की सापेक्षता में बीस सिद्ध होते हैं। कहानी और उपन्यास कला के तत्वों तथा समालोचना के वर्तमान मानदण्डों की कसौटी पर कसने के बाद स्पष्ट हो जाता है कि बिस्मिल्लाह जी की कथाधर्मिता प्रेमचंद जी की परम्परा का ही संशोधित-परिवर्तित विस्तार है तथा इस संदर्भ में वे अपने समसामयिकों से मीलों आगे हैं।

दैनंदनीय व्यवहारों में चेतना का सामान्य अर्थ जागरुकता और सजगता ही होता है जो कि साहित्यकार जैसे व्यापक लोककल्याणकारी कार्यों के कर्ता के लिए अत्यधिक महत्व रखती है। जिस साहित्यकार की चेतना जितनी अधिक व्यापक होगी, उसकी साहित्य सर्जनाएँ भी उतनी ही अधिक देशकालातीत, प्रासंगिक एवं जनहितैषी होंगी। रचनाकार के लिए चेतना विषयों को समझने और पाठकों को समझाने का कार्य करती है। ऐसे में जिस साहित्य-सर्जक की चेतना जितनी अधिक उन्नत किस्म की होगी, वह अपनी सर्जनाओं के लिए उतने ही अधिक समाज हितैषी विषयों का चयन कर सकेगा। मनुष्य के जीवन-क्षेत्र की भाँति ही चेतना की भी विविध प्रकृतियाँ, मसलन- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि होती है, जिनमें रचनाकार एतद्विषयक विषयों का ज्ञान रखने के साथ ही उसके प्रति सजग भी होता है। चेतना की आवश्यकता केवल साहित्यकार जैसे मनीषियों को ही नहीं अपितु साधारण मनुष्यों को भी पड़ती है जिसके आधार पर ही वे

लोकव्यवहार करते हैं। समसामयिक कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह में साहित्य-सर्जक और सामाजिक दोनों रूपों में चेतना की विविध प्रकृतियों अंतर्भुक्त रही हैं जिन्हें हम उनके कथा-साहित्य में भली भाँति देख सकते हैं। बिस्मिल्लाह जी अपने समय के समाज अर्थ, राजनीति, धर्म, संस्कृति और साहित्य आदि सभी जीवन क्षेत्रों के प्रति न केवल सजग रहे हैं बल्कि इनके गहन अध्येयता और मीमांसक भी रहे है तभी तो इन्हें इन क्षेत्रों में व्याप्त संगतियों-विसंगतियों, प्रवृत्तियों और परिस्थितियों आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्य अनुभवजन्य ज्ञान था।

यदि बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों पर दृष्टिपात किया जाए तो परिलक्षित होता है कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि सभी प्रकार की चेतनताएँ अंतर्भुक्त रही हैं। चाहे भावात्मक प्रकृति के उपन्यास हो या फिर सामाजिक, धार्मिक प्रकृति के सभी उपन्यासों में उन्होंने अपनी स्वानुभूतियों के साथ-साथ अपने देशकाल और वातावरण की परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, चित्तवृत्तियों तथा आवश्यकताओं आदि को शब्दों के माध्यम से उड़ेल दिया है, और यह सब मानव-जीवन के विविध श्रोतों के गहन ज्ञान और अनुभव आदि से ही सम्भव हो सका है। आर्थिक चेतना की प्रकृति में अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास गरीबी, भुखमरी, दरिद्रता, वस्त्रहीनता, आवास की समस्या, सरकारी योजनाओं की विफलता, भ्रष्टाचार, शोषण, दमन, उत्पीड़न, बेरोजगारी, बंधुआ मजदूरी, सहकारी व्यवस्था या न्यून मजदूरी की समस्या, महंगाई, बेरोजगारी, पूँजीवादी तथा और पारिवारिक भरण-पोषण की समस्या को अभिव्यक्ति प्रदान करते दिनाई देते हैं। अर्थ जैसे जीवन के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष के संदर्भ में निर्णित बिस्मिल्लाह जी की आर्थिक चेतना का आधार जितना उसका भोगा हुआ यथार्थ रहा है, उतना ही उनके गाँव, देश और पड़ोसी की आर्थिक परिस्थितियाँ भी निर्णायक भूमिका में रही हैं। दरअसल बिस्मिल्लाह जी की आर्थिक चेतना व्यक्तिगत जीवनानुभव तथा युगीन परिस्थितियों का ही समन्वित परिणाम रही है। इसी तरह से बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में अंतर्भुक्त सामाजिक चेतना भी समाज

में व्याप्त विसंगतियों और विद्रूपताओं के प्रकटीकरण से ही संबधित रही है। वैसे तो बिस्मिल्लाह जी ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज को प्रतिनिधित्व प्रदान करते हुए हिन्दू और मुस्लिम दोनों समाजों में व्याप्त विसंगतियों और प्रवृत्तियों को उजागर किया हैं लेकिन जन्मना मुस्लिम समाज से अंतर्संबंधित होने के कारण वे इस समाज को भाषिक व्यापकता और यथार्थता के साथ व्यक्त करने में सफल रहे हैं। ऐसे में उन्होंने अपने उपन्यासों में वर्ग भेद जाति भेद, अस्पृश्यता, स्त्रियों की दयनीय दशा, मेहर, तलाक, बहुपत्नी प्रथा आदि सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों अशिक्षा, यौनाचार आदि को कथानकीय अभिधान प्रदान किया है।

बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में प्रक्षिप्त राजनीतिक चेतना, राजनीतिक जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं के अभिव्यक्तिकरण से संबंधित रही है जिसमें चुनावी भ्रष्टाचार, वोट बैंक की राजनीति, नेताओं की बादा-खिलाफी, चुनावी घोषणाओं का खोखलापन, दलगत राजनीति, दलबदल प्रणाली, जबरन मतदान, वोटो की खरीद-फरोख्त, चुनावी राजनीति, चुनाव जीतने के लिए नेताओं द्वारा साम्प्रदायिक दंगे करवाना, सरकारी योजनाओं का गबन, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, नेताओं और प्रशासन की मिलीभगत से जनता को लूटना आदि मर्मातक वर्णन-विवेचन शामिल है। इसी तरह बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में व्यक्त धार्मिक चेतना हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों धर्मो में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्डो, अंधविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं, मान्यताओं, विश्वासो आदि के वर्णन-विश्लेषण से संबंधित रही है। इसमें बलिप्रथा, मंदिरों-मस्जिदों पर लगने वाले मेलो, मनौतियों, विश्वासों, धर्म के नाम पर होने वाले हिन्दू-मुस्लिम दंगों तथा विशेष रूप से उल्लिखित किया जा सकता है। बिस्मिल्लाह जी सांस्कृतिक चेतना की प्रसारता, भारत की सांस्कृतिक विविधता के सापेक्ष ही रही है जिसमें हिन्दू और मुस्लिम समाज के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, आभूषण, पर्व, त्यौहार, मेले, लोकगीत व लोककथाएँ तथा लोकनृत्य आदि की अभिव्यक्ति सम्मिलित रही है।

उपन्यासों की भाँति ही बिस्मिल्लाह जी की कहानियों भी चेतना के विभिन्न स्वरूपों से संपन्न रही हैं। इनमें भी विभिन्न प्रकार की चेतनाओं के उन्ही घटकों की अभिव्यक्ति हुई है जिनकों हम उनके उपन्यासों में देख चुके हैं। स्वानुभूतियों, सामाजिक चित्तवृत्तियों, परिस्थितियों आदि का समन्वय करते हुए कहानीकार ने अपनी कहानियों में आर्थिक चेतना की प्रगति में गरीबी, भुखमरी, अकिंचनता, वस्त्रहीनता, आवास विहीनता, सरकारी योजनाओं की विफलता, बाजारवाद पूंजीवाद, सहकारी व्यवस्था, ऋण की समस्या, बेकारी-बेरोजगारी, मजदूरों का शारीरिक-मानसिक शोषण, बालकाय बंधुआ मजदूरी आदि का चित्रण किया है जबकि उसकी सामाजिक चेतना जातिगत भेदभाव, लिंगगत एवं वर्गगत समस्या, स्त्रियों की दयनीय स्थिति, तलाक, मेहर, बहुपत्नी प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों के वर्णन, अशिक्षा, अनैतिक यौनाचार, विवाहेतर सम्बंध आदि के प्रकटीकरण से संबंधित रही है। इसी तरह बिस्मिल्लाह जी की कहानियों की राजनीतिक चेतना वोट बैंक की राजनीति, चुनावी घोषणाओं के खोखलेपन, जबरन मतदान करवाने, वोटों की खरीद-फरोख्त, राजनीति और प्रशासन की मिली भगत, दलगत राजनीति, दलबदल, वोटों के लिए करवाये जाने वाले साम्प्रदायिक दंगों तथा राजनीति में महिलाओं और सामान्य व्यक्तियों की सहभागिता के अभाव आदि से संबंधित रही है जबकि धार्मिक चेतना, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, धार्मिक आयोजन, मंदिर-मस्जिद विवाद, साम्प्रदायिकता और कुरीतियों-कुप्रथाओं के अभिव्यक्ति से सरोकार रखती है। इसी तरह से बिस्मिल्लाह जी की कहानियों की सांस्कृतिक चेतना के अंतर्गत हिंदू, मुस्लिम समाज के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, आभूषण, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, मैले, उत्सव, लोकगीत, लोककथा एवं लोकनृत्य आदि का वर्णन सम्मिलित किया जा सकता है।

बिस्मिल्लाह जी के कथासाहित्य के शिल्पगत वैशिष्ट्य की बात करें तो इसमें जितनी अधिक विविधता अंतर्भुक्त रही है उतनी ही अनन्यतम और कसावटीपन भी दृष्टिगोचर होता है। भाषा की प्रवाहमयता निरंतरता और कसावट जहाँ इनके भावपक्ष को सार्थक एवं

उद्देश्यपूर्ण बनाता है वहीं तत्सम्, तद्भव, देशज एवं विदेशज शब्दों के अतिरिक्त कहावतों, मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से बिस्मिल्लाह जी के कथा-साहित्य के कला पक्ष में चार-चाँद लग गए हैं। अभिधा, व्यंजना तथा लक्षणा नामक तीनों शब्द-शक्तियों के प्रयोगवाली उसकी भाषा रचना और रचनाकार दोनों के उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल रही है। बिस्मिल्लाह जी ने अपने ध्येय के अनुरूप ही अपनी कथात्मक रचनाओं में आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक और व्याख्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। विषय और उद्देश्य के अनुरूप कथा-साहित्य में शैली का चयन और प्रयोग इनकी रचनाओं के भावपक्ष और कलापक्ष के बीच के संबंधों को और भी अधिक प्रगाढ़ बना देता है।